(E - 108) प्रभु तोरी अब ही महिमा

(आशावरी–राग)

प्रभु तोरी अब ही महिमा जानी; प्रभु तोरी० टेक०
अबलों मोहमहामद पिय मैं, तुमरी सुध विसरानी;
भागजोग तुम शांति छबी लखि, जडतानींद बिलानी। प्रभु० १

जग-विजयी दुखदाय रागरुष, तुम तिनकी थिति भानी;
शांतिसुधासागर गुनआगर, परम विराग विज्ञानी। प्रभु० २

समवसरन अतिशय कमलाजुत, पै निरग्रंथ निदानी;
कोह विना दुठ मोह विदारक, त्रिभुवनपूज्य अमानी। प्रभु० ३

अेकस्वरुप सकलज्ञेयाकृत, जगउदास जगज्ञानी;
शत्रुमित्र सबमैं तुम सम हो, जो दुखसुखफलथानी। प्रभु० ४

परम ब्रह्मचारी हूवै प्यारी, तुम हेरी शिवरानी;
हूवै कृतकृत्य तदपि तुम शिवमग, उपदेशक-अगवानी। प्रभु० ५

भई कृपा तुमरी तुममैं यह, भक्ति सु मुक्तिनिशानी;
हूवै दयाल अब देहु दौलको, जो तुमने कृति ठानी। प्रभु० ६